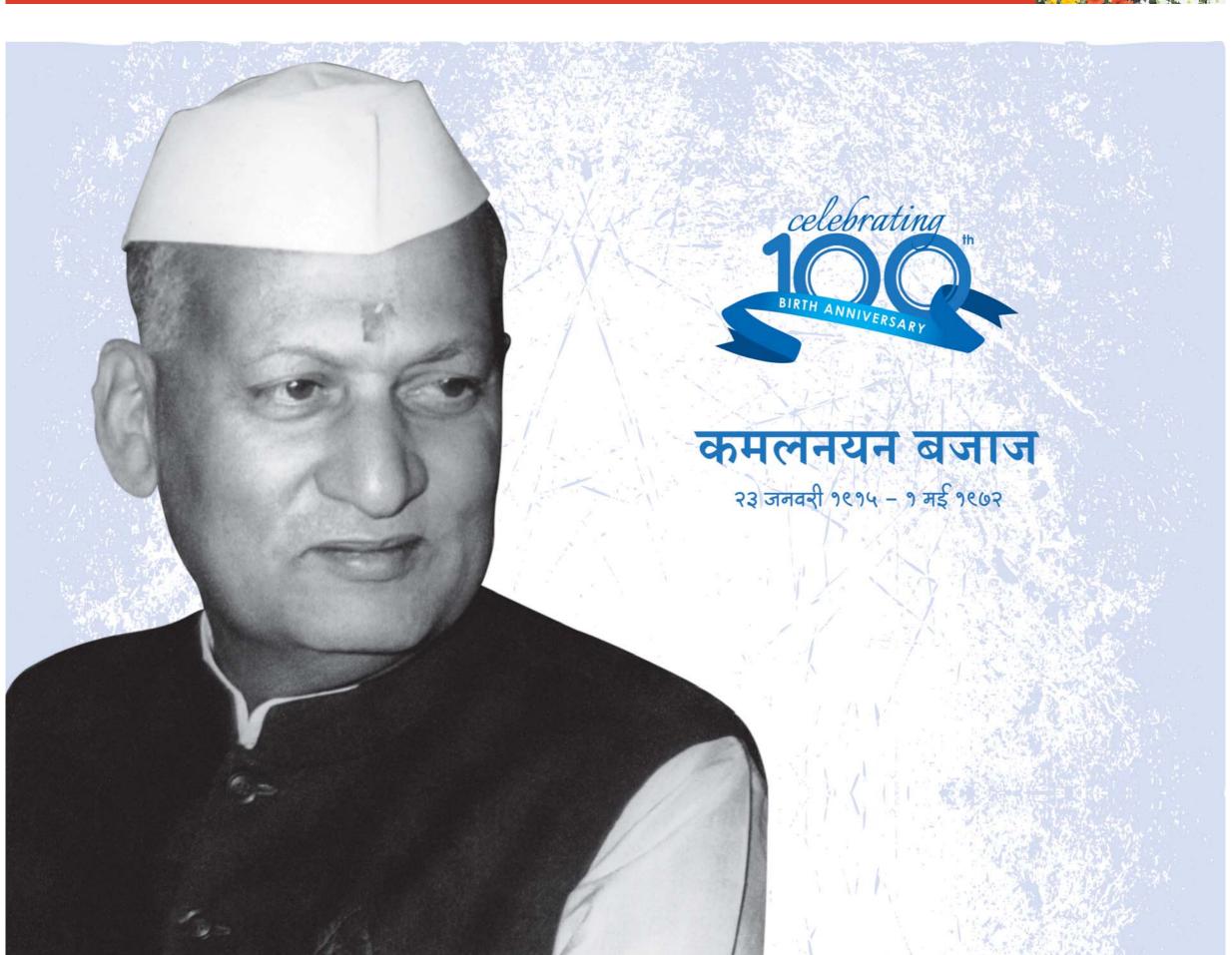


H2351C1

हरियाणा । दिल्ली । चंडीगढ़ । पंजाब । उत्तर प्रदेश । उत्तराखंड । हिमाचल । जम्मू-कश्मीर राजधानी ** वर्ष १२ अंक २८६ पृष्ट : १६+१६ मूल्य : साढ़े तीन रुपये



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' योजना का किया आगाज



बजाज समूह के शिल्पी

भारत में खलबली थी। देश-विभाजन, युद्ध, दंगे; खाद्यान्न, बिजली, कचे माल, टेक्नोलॉजी और विदेशी मुद्रा की कमी; बैंकिंग प्रणाली में उथल-पुथल और लाइसेंस राज का आरंभ - १९४०, ५०, ६० के दशकों और १९७० के आरंभिक वर्षो में देश और उसके उद्यमियों के सामने ऐसी अनेक गंभीर चुनौतियां थीं।

कमलनयन बजाज परेशान हुए बगैर चुपचाप अपने काम में जुट गये। १९४२ में बजाज समूह की कुल बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये से भी कम थी; २०० से भी कम कामगार थे; कपास ओटने तथा गांठें बनाने वाली चंद मिलें थीं और काफी सारा कर्ज था। उनका पहला काम था कर्ज उतारना। देश-विभाजन के समय बजाज समूह की एक तिहाई संपत्ति का नुकसान हो गया। उन्होंने एक नयी शुरुआत की। अगले

तीन दशक में उन्होंने १६ फैक्टरियां स्थापित कीं और पांच का अधिग्रहण किया। १९६५ तक बजाज समूह देश का १९ वां सब से बड़ा समूह बन गया। आज इस समूह की मार्केट कैप लगभग १३०,००० करोड़ रुपये तथा टैक्स पूर्व मुनाफा ८,००० करोड़ रुपये से ऊपर है। बजाज ऑटो मोटरसाइकल बनाने वाली दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी कंपनी है। दोनों बजाज आलिआंज इन्श्योरेंस कंपनियां और उपभोक्ता वित्त कंपनी बजाज फाइनांस अपने - अपने क्षेत्र में अग्रणी हैं।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि कमलनयन बजाज ने समूह में मूल्यों और नैतिकता की नींव रखी। इस विरासत को उनके वारिस बड़ी निष्ठा से सहेजे हुए हैं - और यही है बजाज समूह के शिल्पकार को उनकी सची श्रद्धांजलि।